मैन V/S वूमैन

आप कैसे पुरूष पर राज कर सकती हैं .....
पुरूष के कौन-कौन से गुण स्त्री को भाते हैं ....

डी. के. दुआ

मैन v/s वूमैन

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi – 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-92-0

Price: ₹ 294.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

मैन V/S वूमैन

डी. के. दुआ

लेखक के बारे में

मैं परिवार के साथ दिल्लीवासी हूँ। पेशे से मैं एक डॉक्टर हूँ। बचपन से लिखने का शौक है। कुछ फिल्मों की कहानियाँ भी लिखी हैं। जितना लिखने का शौक है, उतना पढ़ने का भी है। आज उम्र के दूसरे पड़ाव में पहुँचने के बाद सोचा कि, अपनी सोच को क्यूँ ना एक शक्ल दी जाये। जैसे सच कड़वा होता है, दवा कड़वी होती है, वैसे ही ये मेरी पुस्तक है। मैं किताबों को पढ़ता हूँ ज्ञान बढ़ाने के लिये। वैसे ही आपसे अनुरोध है कि, आप भी मेरी पुस्तक को दवा समझ के पढ़ें। आपका उपचार करेगी भले ही कड़वी लगेगी।

मैं कुछ समाचार पत्रों में कभी–कभी ब्लॉग भी लिखता हूँ। मुझे मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक किताबें पढ़ने का शौक है, और मैं अपने पाठकों की टिप्पणी को पढ़ने के लिए सदैव तैयार रहता हूँ।

तुम मुझे आम तौर पर पुस्तकों के मेलों में पा सकते हो। एक छात्र के रूप में, मैं सबसे अलग था। मैं सबसे अच्छी बहस कर सकता था।

मुझे कारणों के कारण ढूँढने में मजा आता है, लेकिन एक दिन सच मिल जाता है। समस्या का कारण मिलने से ही तो समाधान मिलेगा.....।

मैं पाठकों से और उन लोगों से प्रेरणा लेता हूँ, जो मेरी आलोचना करते हैं।

पाठकों आजकल आप ही मेरे गुरू हैं। मेरी आगे आने वाली **पुस्तकें.....**

1. **भाग्य को बदलने का शॉटकट**
2. **एक आम आदमी बुराईयों से भरा हुआ**

पुस्तक के बारे में

स्त्रियों – ध्यान से सुनो – तुम बराबरी की बात करती हो, जबकि तुम पुरूष से ऊपर जा सकती हो। अगर तुम अपने गुणों में महारथ हासिल कर लो, तो पुरूष तुम्हारे चरण धोकर पियेगा, तुम्हारे पीछे–पीछे घूमेगा, लेकिन आज स्त्री यह भूल गई है कि, उसका असली रूप क्या है, उसकी असली ताकत क्या है? भगवान ने उसे पहले से ही अपरहैण्ड बनाया है। उसके पास वो है, जो पुरूष को चाहिए। वो चाहे तो पुरूष को उस ताकत से झुका सकती है, लेकिन वो अपनी इस ताकत को भूलती जा रही है। वो पुरूष की नज़र में बराबर नहीं बल्कि, महान बन सकती है।

मैं ये मानता हूँ कि, कहीं–कहीं गुण और योग्यता में महिला, पुरूष से ऊपर या पुरूष, महिला से आगे हो सकता है, लेकिन लिंग भेद से किसी को नीचा कहना ठीक नहीं।

स्त्री की सफलता पुरूष को हराने में नहीं बल्कि, पुरूष को अपने पीछे घुमाने में है, लेकिन आज यह ख़त्म होता जा रहा है। जब स्त्री को यह पता चलता है कि, पुरूष में आज उसके प्रति आकर्षण नहीं रहा तो, वह बौखला जाती है। जब उसे यह पता चला कि, मेरे रूठने पर भी मुझे मनाने नहीं आता है, तब तो बस पूछो मत। स्त्री सशक्तिकरण से पुरूष के कुछ अधिकार समाप्त होते जा रहे हैं।

बलात्कार का अधिकार, गाली देने का अधिकार, मार–पीट करने का अधिकार, मानसिक तौर पर प्रताड़ित करने का अधिकार, अगर ऐसे अधिकारों के खोने वाले पुरूष अपने सम्मान को खोना समझते हैं तो, यह उनकी गलत मानसिकता है।

अपने अधिकारों के लिए लड़ना अच्छी बात है। पुरूष के अत्याचारों के खिलाफ लड़ना अच्छी बात है, लेकिन अपना क्षेत्र, अपनी मर्यादा, अपनी ज़िम्मेदारी भूलकर, पुरूष के क्षेत्र में प्रवेश करके बराबरी का दावा ठोकना गलत। पुरूष की गलत फहमी दूर हो गई है कि, स्त्री गुलाम थी, निर्भर थी, और हमेशा रहेगी। लेकिन अब स्त्री को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि, उसका असली स्वरूप वुमनहुड है, मदरहुड है और केयर करने वाली।

आज यह स्थिति है कि, अगर कोई स्त्री, पुरूष पर अत्याचार कर दे तो, समाज के दूसरे पुरूष, पुरूष को ही अत्याचारी समझेंगे, भले ही उस पुरूष ने कोई गलती न करी हो।

यह दृष्टिकोण, यह व्यवस्था पुरूष की खुद की कमाई हुई है, क्योंकि पुरूष ने स्त्री पर 1000 साल से अत्याचार किया है।

स्त्री और पुरूष के बीच आजकल सैक्स की असंतुष्टि एक मुख्य कारण है। पुरूष सैक्स में लेने के लिए उतरता है, जबकि स्त्री सैक्स में उतरती है देने के लिए।

एक लड़की ने एक लडके को छेड़ा, आप उस लड़के की मदद के लिए नहीं जाएंगे, बल्कि मुस्कुरा के चले जायेंगे और दूसरी तरफ लड़की के हेल्प के लिए

सभी पुरूष दौड़कर चले आयेंगे। **पुरूष की यह स्थिति भी खुद उसी की सोच के कारण है और वो सोच है, अपनी स्त्री को दबा के रखना और दूसरे की स्त्री की मदद करना।**

अधिकारों की समानता कुछ हद तक आवश्यक थी, लेकिन हर क्षेत्र में समानता सामाजिक विक्रती बन जायेगी। कुछ महिलाएँ, पुरूष का दबा पाने में सफल भी हैं, तो दूसरी तरफ वो अपना आकर्षण खोने पर मजबूर भी है।

आज एक स्त्री अगर अधिक कमाती है तो, वो अपने से कम कमाने वाले पुरूष से शादी करने को तैयार नहीं है क्यों?

अनुक्रमांक

क्र.	विषय–सूचि	पेज नं.
01	समानता की दौड़	01
02	स्त्री–पुरूष के मौलिक गुण	20
03	रिश्ता निभाने का तरीका	31
04	ध्यान रखने योग्य बातें	41
05	क्या आप ब्रेकअप चाहते है?	44
06	सैक्सुअल रिश्ता	49
07	नारीवाद	57
08	अपने–अपने गुणों का विकास	65
09	सैक्सुअल या सैन्सुअल	69
10	तलाक और बलात्कार	72

अध्याय - 1

समानता की दौड़

सत्ता एक नशा है, जिससे भ्रम पैदा होता है। पहले पुरूष के पास सत्ता थी, ताकत थी। इसलिए प्राचीन काल से वो स्त्री को दबाता आ रहा था, लेकिन आज महिला सशक्तिकरण के बाद आज सत्ता स्त्री के पास है, तो उसे ताकत का नशा हो रहा है। आज वह पुरूष को दबा रही है, ब्लैकमेल कर रही है। कोई भी अगर शक्ति का दुरूपयोग करता है, तो उसकी नैतिक शक्ति क्षीण हो जाती हैं।

महिलाओं को बराबर का अधिकार चाहिए, सही बात है, मिलने चाहिए, बल्कि बराबर क्यों, उन्हें पुरूष से अधिक तवज्जों (सहुलियत) मिलनी चाहिए, लेकिन यह संभव नहीं कि, वे पुरूष के बराबर हो जाये, यह प्रकृति के खिलाफ है। पुरूष अगर नंगा घुमता है, तो वह भी नंगी घूमे ये उचित नहीं।

बहुत चर्चा है आजकल इस बात की कि, पुरूष श्रेष्ठ है या स्त्री। कौन ज्यादा ताकतवर है, किसे ऊपर रखा जाये और किसे नीचे। जिस तरह पौधा कभी जड़ से बड़ा नहीं हो सकता उसी तरह यह संसार – (पुरूष) रूपी पौधा कभी स्त्री रूपी जड़ से बड़ा नहीं हो सकता।

अगर पुरूष वृक्ष है, तो स्त्री उसकी जड़।
दोनों अहम हैं, लेकिन बराबर नहीं।

मानता हूँ, प्राचीन काल से पुरूष ने स्त्री को दबाया है, अत्याचार भी किये हैं। कहीं दहेज प्रथा, तो कहीं सती

प्रथा। यहाँ तक की अधिकारों में भी भेदभाव, लेकिन सभी पुरूष एक जैसे नहीं। आज स्त्री, पुरूष से आगे निकल रही है और कहीं–कहीं तो पुरूष को दबाकर आगे निकल रही है। कभी ब्लैकमेल करके, कभी कानून का दुरूपयोग करके, तो कहीं अपने अधिकारों का वास्ता देकर और यही नहीं कभी–कभी तो Woman (वूमन) कार्ड का इस्तेमाल भी कर लेती हैं।

लेकिन इस रेस में स्त्री का कुछ भला हुआ है, तो बहुत कुछ नुकसान भी। जो पुरूष कभी स्त्री पर मरता था, उसके बिना जी नहीं सकता था, स्त्री को अपनी अर्धांगिनी समझता था, स्त्री की वो आकर्षण शक्ति जो पुरूष की कमजोरी बन सकती थी, मगर आज वो स्त्री अपनी आकर्षण शक्ति खोती जा रही है।

लेकिन आज भी कुछ स्त्री–पुरूष, इतने समझदार हैं कि, वे अपनी सीमाओं को जानते हैं। एक–दूसरे के अधिकार नहीं छीनते और अपनी–अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। वे लोग खुशहाली भरा जीवन जी रहे हैं, हमें उनसे सीखना चाहिए।

पुरूष में डोमीनेटिंग नेचर प्राचीन काल से ही रहा है, लेकिन आज काफी हद तक ये खत्म हो रहा है। यह पुरूष डोमीनेशन का आदि हो चुका है या ऊपर वाले ने उसमें ये गुण कूट–कूट कर भरा हुआ है या फिर खुद स्त्री ने उसे ये अधिकार हजारों सालों से दिया हुआ है।

आज अगर स्त्री उस डोमीनेटिंग प्रकृति को खत्म करना चाहती है और वो भी बलपूर्वक या कानून का उपयोग करके या समाजसेवी संस्थाओं के द्वारा, तो उसका परिणाम बहुत दुखद है। खुद स्त्री के लिए भी और पुरूष के लिए तो है ही। अगले 50 सालों में स्थिति और बिगड़ सकती है। पुरूष की स्त्री में रूचि केवल ऊपर–ऊपर से ही रह जायेगी।

आज जो Working Ladies है, वो पुरूष को बदलने में लगी हुई है, लेकिन उन्हें ये नहीं पता कि, पुरूष में बदलने की योग्यता नहीं है। अगर तुम उससे सोबर तरीके से पेश आओगी तो वो अपना Response जरूर बदल लेगा। कुछ स्त्रियाँ पुरूष को बदलने का साहस कर रही हैं, क्योंकि वो आज फाइनेन्शियली निर्भर नहीं हैं। लेकिन मैं समझता हूँ, अपने अधिकारों तक लड़ना तो ठीक था, लेकिन इससे आगे जाना ज़्यादती होगी।

बलात्कार, तलाक, पुरूषों द्वारा आत्म हत्या, कई स्त्रियों की देर तक शादी ना होना इसी गलत दिशा में जाने का परिणाम है।

एक तरफ महिला सशक्तिकरण चल रहा है, पुरूष से बराबरी के लिए। दूसरी तरफ महिला खुद अपना अस्तित्व खो रही है। खुद उसके अन्दर अपने–आपसे एक युद्ध चल रहा है। इतना ही नहीं एक महिला दूसरी महिला से कितना जलती है, ये आप बखूबी जानते हैं।

महिला कमजोर नहीं हैं। जो पुरूष कर सकता है, वो महिला भी कर सकती है। तो फिर बसों, ट्रेनों में उनके लिए रिजर्व सीटें रखना, रेलवे स्टेशनों पर अलग लाइनें बनाना, ये सब क्या है। स्त्री के लिए ये स्पेशल अधिकार क्यों? ये सब तो एक विकलांग या बूढ़े व्यक्ति के लिए होना चाहिए। उस स्त्री के लिए क्यों? जो बराबरी की बात करती है।

जो स्त्री प्रसव का दर्द सहन कर सकती है, जो बराबरी के लिए लड़ती है, फिर विशेषाधिकार क्यों?

ये भी समाज के कुछ ठेकेदारों का ड्रामा है। खुद अपनी स्त्रियों को दबाकर रखेंगे और दूसरे की स्त्री के अधिकारों के लिए लड़ेंगे। स्त्री को इनकी ये चालाकी समझ क्यों नहीं आती?

मैन V/S वुमैन

- क्या आप तलाक चाहते हैं...
- आप कैसे पुरूष पर राज कर सकती हैं...
- पुरूष के कौन-कौन से गुण स्त्री को भाते हैं...

लेखक से सम्पर्क हेतुः
dkdua28@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-81-19927-92-0
9 788119 927920